MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता

April To June 2021
Special Issue-01

अतिथि संपादक

डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे

TRUE COPY

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubl@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon,Dist-Satara

२६. दलित विमर्श का स्वरूप एवं अवधारणा ||100
डॉ० विनय कुमार

२७. दलित विमर्श का स्वरूप ||105
प्रा. धोंडिबा भुरे

२८. हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना ||108
डा.दस्तगीर एस. देशमुख,शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम

२९. अफसरी सभ्यता में रौंदे हुए दलितों की दास्तान : कोर्ट मार्शल
डॉ. देविदास भिमराव आथव ||112

३०. इक्कीसवीं सदी की प्रथम दशक की हिंदी कहानी में दलित संवेदना
राठोड ज्योती चंद्रकांत ||114

३१. दलित समाज का राजनीतिक वर्तमान और दलित उपन्यास
Dr Sindhu A ||118

३२. टीस कहानी में आदिवासी विमर्श
डॉ.पुष्पा गोविंदराव गायकवाड ||123

३३. आम्बेडकरवादी कविता संग्रह 'दहकते अंगारे'
प्रा. रगडे परसराम रामजी ||126

३४. उसके जख्म कहानी में दलित स्त्री की वेदना
डॉ.पठान जे.सी. ,सावते राजू अशोक ||130

३५. हिन्दी–तेलुगु उपन्यासों में दलित आन्दोलन का प्रभाव
–वी . रविंदर ||133

३६. 'दलित आंदोलन और हिंदी साहित्य'
डॉ.अनिलकुमार राठोड, प्रा. हिरामन देवराम टोंगारे ||138

३७. उपभोक्तावादी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश की कहानियाँ
प्रा.युवराज राजाराम मुळये ||142

३८. आदिवासी साहित्य का स्वरूप
डॉ परमेश्वर जिजाराव काकडे ||146

TRUE COPY
PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS & COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara

महत्तो एक नंबर का अजगर है। बडा बडा वी.डी.ओ. एस.डी.ओ. कोलरी मैनेजर ठेकेदार का पैर बांध के दूध पी जाता कपडा और मूटीखाना का दुकान वाला सेठ लोग राजस्थान का पीवणा नाग है। सुबेदार रामबली राय गंगा के किनारे का चित्ती (करैत) है तो मुनीम जगेशर सिन्हा बोडा साँप है। सूद का विष धीरे–धीरे असर करता और मुनीम के गोलमाल का जहर छौ मास बाद सपेरा के अनुसार करैत का विष धीरे–धीरे तेजी पकडता है और बोडा यानी बहरा साँप का छह महीने बाद उडीसा का शंखचूड नाग देखना है तो उडिया फोरेस्ट अफसर दास को देख लो। तक्षक देखना है तो कोलरी मैनेजर बैनर्जी को देख लो। दो मुँहा साँप अबी तक आप नही देखा तो युनियन लीडर सिन्हा को देख लो इसका मूँ छौ–छौ मास बाद नही छौ छौ मिनट पर खुलता बंद होता। लेबर से एक बात बोलता– मैनेजमेंट से दोसरा –५ लेखकने उच्चवर्णीयो के नामकरण अजगर धामिन, पीवना नाग, चित्ती कोबरा ऐसे रखे है। यह लोग आदिवासियो की जमीन ग्रास लेते है और उन्हे बदले मे दर दर की ठोकरे खाने को मिलती है। शिबू काका के साथ अमानवियता का व्यवहार किया जाता है। उनकी अपनी जमीन तक ओपेन के पेट मे समा जाती है। और ये आदिवासी जल, जंगल के दावेदार अपने अधिकारो से उपेक्षित रह जाते है। आदिवासियो को भी उनका हक्क उन्हे मिलना चाहिए वे भी इस देश के नागरिक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

१. कथानंद – संपादक अजय टेंगसे
२. टीस–संजीव
३. अक्षरा– पत्रिका

□□□

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara.

33

आम्बेडकरवादी कविता संग्रह 'दहकते अंगारे'

प्रा. रगडे परसराम रामजी
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
शंकरराव जगताप आर्ट्स अ‍ॅण्ड
कॉमर्स कॉलेज वाघोली,
ता. कोरेगांव, जि. सातारा.
सलग्न : शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

****

प्रस्तावना :–

TRUE COPY

इक्कीसवीं शताब्दी अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इक्कीसवीं शताब्दी के कारण साहित्य मे नवविमर्शों कि चर्चाएँ होने लगी है। वैश्वीकरण के कारण हाशिएँ का समाज मुख्यधारा से जुडकर अपनी अभिव्यक्ति करने लगा है। इस शताब्दी में जो विचार एवं सिध्दांत दिखाई देते है, उसकी जडे बीसवीं शताब्दी मे है। बीसवीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ तत्वचिंतक, मानवजाति के उध्दारक, विधीविशेषज्ञ, स्वतंत्र भारत के कानुनमंत्री तथा भारतीय संविधान के जनक डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी इस युग के महानायक, युग निर्माता एवं युगपुरूष माने जाते है। उन्हों ने देश के दलित, पिछडे समुह के लोगों के लिए संघर्ष किया। उन्हें मानवमुक्ति का उध्दारक माना जाते है। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी ने देश की विषमतावादी समाजव्यवस्था को समाप्त कर स्वतंत्र, समता, बंधुता एवं सामाजिक न्याय पर आधारीत समाज की स्थापना करने का कार्य किया।

'आम्बेडकरवाद' यह एक व्यापक विचारधारा है जो, डॉ.बाबासाहब आम्बेडकरी के आदर्शों एवं दर्शन से उद्भूत विचारों के संग्रह को कहा जाता है। भारतीय सामाजिक आंदोलन के वे सबसे बडे नेता थे। 'आम्बेडकरवादी विचारधारा' कहकर किसी व्यक्ति या समुह को संबोधित किया जाता

है तो, इस का अर्थ यही होता है कि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर द्वारा स्थापित मानवी मूल्यों एवं आदर्शों का अनुपालन करनेवाला। 'आम्बेडकरवाद' डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के विचार एवं दर्शन है। आम्बेडकरवाद दुनिया की सबसे प्रभावशाली और विकसित विचारधारा का नाम है। 'आम्बेडकरवाद' किसी धर्म, जाति या रंगभेद को नहीं मानता, 'आम्बेडकरवाद' मानव को मानव से जोडने या मानव को मानव बनाने का नाम है। 'आम्बेडकरवाद' वैज्ञानिक तथ्यों के आधारपर मानव के उत्थान के लिए किए जा रहे, आंदोलन या प्रयासों का नाम है। 'आम्बेडकरवाद' यह मानव मुक्ति का विचार है, एक वैज्ञानिक दृष्टिकोन है। मानवीय गरीमा के लिए चलाया गया आंदोलन को 'आम्बेडकरवाद' कहा जाता है। मानवतावाद का दूसरा नाम 'आम्बेडकरवाद' है। 'आम्बेडकरवाद' यह शब्द दो शब्दों के मेल से बना है जिसमें 'आम्बेडकर' यह डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी के नाम को मुल आधार है और 'वाद' यह प्रत्यय जोड़ा गया है। अत: आम्बेडकर + वाद इन दो शब्दों को जोडकर 'आम्बेडकरवाद' शब्द प्रयुक्त होता है।

प्रा. दामोदर मोरे 'दहकते अंगारे' कविता संग्रह के संदर्भ में कहते है — '' 'दहकते अंगारे' बंजर और बेजुबाँ जमीन की क्रांतिकारी पुकार है। दीन–दुखियों के दर्द की दहकती दास्तान है। दलित कविता अपने समय और समाज को परिभाषित करते हुए अन्याय, अत्याचार एवम् उत्पीडन के खीलाफ क्षेपणास्त्र जैसी टूट पडती है। इस काव्य संकलन में 'राईटिंग फॉर फायटिंग पोयट्री' का मुझे एहसास होता है।''०१ 'दहकते अंगारे' संग्रह की कविताएँ न्याय माँगनेवाली, समक्ष अस्तित्व के लिए लडने की प्रेरणा देनेवाली, यह समाज व्यवस्था, उत्पादन व्यवस्था, वितरण व्यवस्था और विचार व्यवस्था पर प्रकाश डालनेवाली है। इसके अंतर्गत वैचारिक असंतोष है, जीवन की जटिल समस्याओं का चित्रण है।

डॉ. बाबासाहब जी के विचारों से प्रभावित होकर भारतीय भाषाओं में साहित्य लिखा जा रहा है। डॉ. बाबासाहब जी के विचारों का सबसे अधिक प्रभाव मराठी साहित्य पर रहा है। मराठी भाषिक कवियों की कविताओं का अनुवाद हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भी हुआ है। 'दहकते अंगारे' आम्बेडकरवादी मराठी कवियों की कविताओं का हिंदी अनुवाद है। संपादक प्रकाश बच्छाव जी ने उन्हीं कवियों को काव्यसंग्रह में स्थान दिया है जो आम्बेडकरवादी विचारों का पुरजोर समर्थन करती है। इस संदर्भ में वे कहते है— '' 'दहकते अंगारे' में किन–किन कवियों की कौन–कौन सी रचनाओं को लेना है इसके लिए मैंने एक ही मापदंड बनाया — फुले–अम्बेडकरवाद के विचारों को। जो कविताएँ फुले–अम्बेडकरवाद के विचारों की कसोटी पर खरी उतरती है उन्हें ही संकलन में स्थान दिया है।''०२ इस संकलन में कुल तेतिस कवियों की इक्यासी कविताओं को स्थान दिया गया है, जो अम्बेडकरवादी विचारों का प्रतिपादीत करती है। इस संकलन की पहली ही कविता नारायण सुर्वे जी की है 'चार शब्द' जो इस काव्यसंग्रह के नाम को सार्थक बनाती है — '' रोजी का, रोटी का सवाल हर दिन का ही है, / कभी फाटक के बाहर कभी फाटक के अंदर है। ग ग ग ग / अकेला ही नहीं आया, युग का भी साथ है। सजग रहिए; तुफान की यह शुरूआत है।। / मजदूर हूँ : मै दमकता तलवार हूँ। / सारस्वतो! जरा सा गुमाह करनेवाला हूँ।। ''०३ कवि ब्राह्मणवादी व्यवस्था का विरोध करता है। काव्यसंग्रह के शिर्षक को सार्थक बनाता है। काव्य संकलन में नारायण सुर्वे, केशव मेश्राम, नामदेव ढसाल, यशवंत मनोहर, दया पवार, दामोदर मोरे, सुरेखा भगत, मल्लिका अमरशेख, भगवान भोईर, अरूण काले जैसे कवियों को स्थान दिया गया है। कवि एवं आलोचक डॉ. इंद्रबहादुर सिंह कहते है —'' दलित साहित्य मनुष्य को केंद्र बनाता है। मनुष्य को महानता प्रदान करता है और मानवी स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का जयघोष करता है। इन जीवनमूल्यों के मार्ग में आनेवाले अवरोधों को हटाने के लिए ही उसने

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon Dist-Satara.

निषेध, नकार और विद्रोह को अंगीकार किया है। ग ग ग ग दलित–साहित्य अंधविश्वास, ग्रंथ–प्रामाण्य,आत्मा–परमात्मा और ब्राह्मणवादी नैतिकता एवम् ब्राह्मणवादी धर्मसत्ता को अस्वीकार करता है।''०४

यह संकलन दलित संवेदनाओं को रेखांकित करता है। सदियों के शोषित–पीडित, उपेक्षित दलित आज दहकते अंगारे बन गये है। जली हुई झोपडियों की राख से चिन्गारी रह–रह कर दहकने लगी है। आम्बेडकरवादी अपना परिचय देते हुए मनुवादियों को आगाह करता है कि हमसे टकराने की सोचो मत, अगर टकराओ गे तो जलकर राख बन जाओगे, भाईचारे के साथ रहोंगे तो ठीक है, वरणा लाशों को बिच्छा देंगे, यह ज़मीन किसी एक की नहीं है। आम्बेडकरवादी कवि बच्छाव कहते है – '' यह ज़मीन किसी के बाप की नहीं / जो हर किसी को चाहे कुचलना – – – –/ सोच लो, हम नही तो तुम नहीं / जिन्दगी किंमती है, बाद में पडेगा पछताना /''०५ कवि ब्राह्मण्यवादी व्यवस्था को संबोधित करते हुए कहता है, आज तक तुमने जनता का शोषण किया है, गरीबों का खून चूसकर तुम अमीर बन गये हो। तुमने छल–कपट, ताकत से सत्ता पर हमेशा अधिकार जमायें रखा। जो गरिब दलित–दमित और सदियों के कुचले हुए हैं, ऐसे मरे हुए लोगों पर तुमने शासन किया है। कवि इन सारस्वतों को संबोधित करते हुए कहता है – याद रखो, ये गरीब तुम्हारी जागीर नहीं है। ये क्रांति की ज्वाला है और इस ज्वाला में सबको जलना पडे। इस संदर्भ में प्रा. प्रकाश बच्छाव जी कहते है – '' यह कविता न्याय माँगनेवाली सक्षम अस्तित्व के लिए लडने की प्रेरणा देनेवाली यह समाज–व्यवस्था, उत्पादन व्यवस्था, वितरण व्यवस्था और विचार व्यवस्था पर प्रकाश डालनेवाली है। इसके अंतर्गत वैचारिक असंतोष है, जीवन की जटिल समस्याओं का चित्रण है।''०६

अम्बेडकरवादी कवि किसी के सामने घिघियाता नहीं है, न ही हाथ जोडकर अन्याय अत्याचार को सहता है। वह प्रजातंत्र में वोट की ताकत पहचानता है, संगठन की शक्ति को समझने लगा है। क्रांति क्या है इसका अर्थ उसने जान लिया है। 'कलयुगे संघे शक्ति' का जाप करता है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' को कार्यान्वित होते हुए देखना चाहता है। वह नहीं चाहता कि कोई सभा संम्मेलनों में अपने झुठे भाषणों से भोली–भाली जनता को ठगे। वह आँखो में धुल झोंकने वाले ठगों को पहचानने लगा है। कवि उन जीवन मूल्यों से नकारता है जिन के सहरे सदियों से शोषण किया है। सीमित दायरे में बंधे हुए जीवन से वह इंकार करता है – '' नया हुआ जीवन / जन्मा तब –/ प्रकाश भी वैसे ही नया हुआ। / नयी हुई ही बातें बोला, / तुतलाते। / ग ग ग ग / नापे हुए ही रास्ते से गये तो / स्वर्ग मिलता है / नापे हुए ही चार खम्भों में / धिकार है – – –/ थू – – –। / ''०७

दलितों का शोषण अनादिकाल से होता रहा है। धर्म शोषण का मुख्य आधार रहा है। शोषणकारी हिंदू धर्म का विरोध महात्मा गौतम बुध्द, चार्वाक, नाथ, महात्मा कबीर, गुरूनानक, संत रैदास, राजर्षी साहू महाराज, महात्मा फुले एवं डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर जी ने किया है। हिंदू धर्म के कारण दलितों को आजीवन दु:ख, दैन्य व दरिद्रता मिली है। कवि हिंदू धर्म को नकारता है। झुठे आश्वासन के शब्दों पर अब उसे विश्वास नहीं है। उसे हिंदू धर्म की हर एक गतिविधियों से बदबू आती है। युध्द के कैदियो जैसे दलित मनुष्यों की भीड में वह रोशनी का फूल खिलाना चाहता है। वह दलितों की मायुसी और उदासीनता को समाप्त करने, नये संघर्ष के लिए, जनता के कोलाहल में सम्मिलित होना चाहता है– '' जिन्हें आजीवन / दु:ख, दैन्य, दरिद्रता मिली हो / वे तफशील के साथ / सबको नकारें न तो क्या करें ? / आश्वासित शब्दों पर / अब मेरा भी भरोसा नहीं / हर एक संदर्भ से / बदबू ही आती है।''०८

आम्बेडकरवादी कवि भाग्यवादी, सवर्णवादी, सारस्ववादी, शोषक–शासकवादी साहित्यकारों की

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara.

शब्द–साधना पर प्रहार करता हुआ कहता है। जो शब्दों का मुखौटा लगाते है उन्हें क्या कहूँ ? कैसे बताऊँ ? ये लोग सौन्दर्य के उपासक है और ऊँची आसंदी पर बैठते है। इन्होंने शब्द साधना की पीड़ा को नहीं झेला है। इसीलिए इनकी बाँझ लालसा प्रसव पीड़ा नहीं जानती। इक्कीसवीं सदी में दलितों का गाँव, वहाँ के स्त्री–पुरूष व बच्चों का वर्णन करते हुए कवि केशव मेश्राम ने लिखा है — हमारी बस्ती में, हमारे घर में प्रवाह–उत्सुक मन रहता है। बस्ती कोलाहल एवं गर्जन के झाग से भरी है। काली लहरों और ज्वार के असीम सागर तरंगित होते रहते हैं। साँचे में ढली हुई मिट्टी की मुरतें कोमल कपास चुनती है; अशक्त खुरदरे हाथ हँसिया के साथ रहते है, चुड़ियाँ खनकती है। इनके बच्चे तपती धूप में पसीने से तरबतर इधर–उधर ऊध म मचाते दिखायी देतें है। खुली टूकों में उभरी नसें, मिलमिलाती आँखे लिए स्त्री–पुरूष काम की तलाश में इधर–उधर भटकतें हैं। बस्ती में मदिरा व माँस की गन्ध बराबर बनी रहती है। महीने भर श्रम करने के बावजुद भी अधमुखी जनता भविष्य की नित नूतन आशा में जीती है। 'हमारी बस्ती में' कवि कहता है — ''. मायें अपने बच्चों को ढँकने लगी आँचल में / होता है संभ्रम / कैसे सुधार हो बस्ती में / ऊबड–खाबड रास्ते / योजना भी लटकी / अभी–अभी बच्चे / कुछ पढते–लिखते है।''९

समय बदल रहा है, परिस्थितियाँ बदल रही है। आजादी के बाद समाजिक परिवर्तन हुआ। परंतु इस परिवर्तन की गति बहुत धीमी है। संवैधानिक शासन के बावजुद स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, न्याय व धर्मनिरपेक्षता यह पंचशील व्यवहार में दिखायी नहीं देते। देश के दलितों में एकता नहीं है। राजनीतिक लाभ मात्र मुट्ठी भर लोगों को मिला है।

निष्कर्ष :—

अत: कहा जा सकता है की कवि प्रकाश बच्छाव द्वारा अनुवादीत मराठी कवितोओं का संग्रह 'दहकते अंगारे' वास्तविक रूपमें आम्बेडकरवादी विचारों का प्रतिपादन करता है। आम्बेडकरी विचारों की दहकती मशाल है यह काव्य संग्रह। 'आम्बेडकरवाद' जाति, धर्म, संप्रदाय, प्रान्त, देश, विदेश से उपर उठकर मानवता का प्रतिपादन करता है। 'आम्बेडकरवाद' स्वातंत्र्य, समता, बंधुत्व, शिक्षा, संघठन, संघर्ष, प्रज्ञा, शील, करूणा को महत्वपूर्ण मानता है।

संदर्भ सूची :—

०१) दहकते अंगारे, संपादक —प्रकाश बच्छाव, प्रकाशन— शारदा प्रकाशन, साई प्रसाद, शिवाजी नगर, बी केबिन, नौपाडा, ठाणे — ४००६०२, प्रथम संस्करण ०१/०१/२००२ (प्रा. दामोदर मोरे — दहकते अंगारे के मुलपृष्ठ से)
०२) वही पृष्ठ क. ११
०३) वही पृष्ठ क. ०१
०४) वही पृष्ठ क. २९
०५) वही पृष्ठ क. ११२
०६) वही पृष्ठ क. १०
०७) वही पृष्ठ क. ०४
०८) वही पृष्ठ क. ०३
०९) वही पृष्ठ क. [illegible]

TRUE COPY

□□□

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS & COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon Dist-Satara.